यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा।।१८।।

यदा=जिस काल में; **विनियतम्**=विशेष रूप से वश में हुआ; **चित्तम्**=अपने कार्यों सहित मन; **आत्मनि**=परतत्त्व में; **एव**=ही; **अवतिष्ठते**=स्थित हो जाता है; **निःस्पृहः**=स्पृहामुक्त; **सर्व**=सब प्रकार की; **कामेभ्यः**=कामनाओं से; **युक्तः**=योग में भलीभाँति स्थित; **इति**=इस प्रकार; **उच्यते**=कहा जाता है; **तदा**=उस समय।

अनुवाद

जिस काल में योगी योग के अभ्यास से चित्त को वश में करके दिव्य तत्त्व में ही भलीभाँति स्थिर हो जाता है, तब उस सम्पूर्ण कामनाओं से मुक्त पुरुष को योगयुक्त कहा जाता है।।१८।।

तात्पर्य

साधारण मनुष्यों की तुलना में योगी की क्रियाओं में यह विशेषता है कि वह मैथुन आदि सब प्रकार की प्राकृत इच्छाओं से मुक्त हो जाता है। पूर्ण योगी की मनःक्रिया इतनी संयमित हो जाती है कि वह किसी भी विषय वासना से उद्विग्न नहीं हो सकता। यह सिद्ध अवस्था कृष्णभावनाभावित भक्तों को अपने आप प्राप्त हो जाती है, जैसा श्रीमद्भागवत (९.४.१८-२०) में उल्लेख है:

स वै मनः कृष्णपदारविन्दयोर्वचांसि वैकुण्ठ गुणानुवर्णने।
करौ हरेर्मन्दिरमार्जनादिषु श्रुतिं चकाराच्युतसत्कथोदये।।
मुकुन्दलिंगालयदर्शने दृशौ तद्भृत्यगात्र स्पर्शेऽगसंगमम्।
घ्राणं च तत्पादसरोजसौरभे श्रीमत्तुलस्या रसनां तदर्पिते।।
पादौ हरेः क्षेत्र पदानुसर्पणे शिरो हृषीकेश-पदाभिवदने।
कामं च दास्ये न तु कामकाम्यया यथोत्तमश्लोकजनाश्रया रतिः।।

'महाराज अम्बरीष ने सबसे पहले अपने मन को श्रीकृष्ण के चरणकमलों में एकाग्र किया; फिर, क्रमशः वाणी को श्रीकृष्ण के गुणानुवाद में लगाया, हरि मन्दिर का मार्जन करने में हाथों को, भगवान् अच्युत की परम पावन लीलाकथा के हृत्कर्ण रसायन श्रवण में कानों को तथा भगवत्-मूर्तिदर्शन में नेत्रों को नियुक्त किया। वे त्वचा से भक्तों का स्पर्श करते, नासिका से कृष्णपादार्पित पुष्पों और तुलसी की सौरभ-ग्रहण करते, रसना से कृष्णचरणार्पित प्रसाद चखते, चरणों से कृष्णमन्दिरों और तीर्थों की यात्रा तथा सिर से श्रीकृष्ण की वन्दना करते थे। अपनी सम्पूर्ण कामनाओं को उन्होंने भगवत्सेवा में लगा दिया था। ये सभी दिव्य कर्म सब प्रकार से शुद्ध भगवद्भक्त के योग्य हैं।'

निराकारवादियों के लिए इस दिव्य अवस्था का वर्णन असम्भव सा हो सकता है, पर कृष्णभावनाभावित भक्त के लिए यह बड़ी सुगम और व्यावहारिक है, जैसा महाराज अम्बरीष के कार्यकलापों के वर्णन से स्पष्ट है। नित्य भगवत्स्मरण द्वारा जब